जल संरक्षण के निमित्त

जल चालीसा

रमेश गोयल

प्रकाशक :
भारत विकास परिषद्

भारत विकास परिषद

तमसो मा ज्योतिर्गमय

स्था. 1963

सम्पर्क ❖ सहयोग ❖ संस्कार ❖ सेवा ❖ समर्पण

सुरेश चन्द्र गुप्ता

राष्ट्रीय अध्यक्ष

भारत विकास परिषद्

भारत विकास परिषद के द्वारा पर्यावरण संरक्षण योजना के अन्तर्गत पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी संतुलन की योजनाओं को कार्यरूप दिया जा रहा है। इस योजना में तुलसी पौधा वितरण, पौधा रोपण, सौर ऊर्जा, वर्षा जल पुनर्भरण आदि योजनाओं को सम्मिलित किया गया है। जल का अभाव तथा उसका दुरुपयोग चिन्ता का विषय है। सीमित मात्रा में जल का उपयोग तथा आवश्यकतानुसार जल का प्रयोग, इस विषय वस्तु के आधार पर परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री–पर्यावरण **श्री रमेश गोयल**–जल स्टार ने जल चालीसा की रचना की है। अब तक जल चालीसा की 50 हजार प्रतियों शिक्षण संस्थानों के माध्यम से वितरित की जा चुकी है।

हार्दिक शुभकामनाएं।

सुरेश चन्द्र गुप्ता

अजय दत्ता

राष्ट्रीय महामंत्री
भारत विकास परिषद्

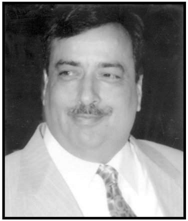

'पर्यावरण' भारत विकास परिषद् का एक महत्वपूर्ण प्रकल्प है और जल संरक्षण पर्यावरण का एक प्रमुख घटक है। परिषद् के राष्ट्रीय मंत्री–पर्यावरण द्वारा 'जल ही जीवन है' संदेश पर आधारित जल चालीसा की रचना प्रशंसनीय व अनुकरणीय है। परिषद् की सभी शाखाओं व सदस्यों द्वारा इस सन्देश को अधिकाधिक लोगों तक पहुंचाया जाना अपेक्षित है।

हार्दिक शुभकामनाएं।

अजय दत्ता

जल चालीसा

जल मंदिर, जल देवता, जल पूजा जल ध्यान।
जीवन का पर्याय जल, सभी सुखों की खान॥
जल की महिमा क्या कहें, जाने सकल जहान।
बूंद–बूंद बहुमूल्य है, दें पूरा सम्मान॥

जय जलदेव सकल सुखदाता।
मात पिता भ्राता सम त्राता॥
सागर जल में विष्णु बिराजे।
शंभु शीश गंगा जल साजे॥

इन्द्र देव है जल बरसाता।
वरुणदेव जलपति कहलाता।।
रामायण की सरयू मैया।
कालिंदी का कृष्ण कन्हैया।।
गंगा यमुना नाम धरे जल।
जन्म-जन्म के पाप हरे जल।।
ऋषिकेष है, हरिद्वार है।
जल ही काशी मोक्ष द्वार है।।
राम नाम की मीठी बानी।
नदिया तट पर केवट जानी।।

माता भूमि पिता है पानी।
यही कह रही है गुरबानी॥
जन जन हेतु नीर ले आई।
नदियां तब माता कहलाई॥
सूर्य देव को अर्पण जल से।
पितरों का भी तर्पण जल से॥
चाहे हवन करें या पूजा।
पानी के सम और न दूजा॥
चाहे नभ हो, या हो जल–थल।
जीव–जन्तु की जान सदा जल॥

बूंद–बूंद से भरता गागर।
गागर से बन जाता सागर॥
नीर क्षीर मधु खिलता तन–मन।
नीर बिना नीरस है जीवन॥
नदी सरोवर जब भर जाए।
लहरे खेती मन हरषाए॥
तीन भाग जल काया भीतर।
फिर भी चाहिए पानी दिन भर॥
तीरथ व्रत निष्फल हो जाएं।
समुचित जल जब हम ना पाएं॥

जल बिन कैसे बने रसोई।
भोजन कैसे खाये कोई॥
नदियों में जब ना होगा जल।
खाली होंगे सब के ही नल॥
घटता भू जल सूखी नदिया।
जाने तो अच्छी हो दुनिया॥
पाइप से हम फर्श न धोएं।
गाड़ी पर हम जल ना खोएं॥
टूंटी कभी न खुल्ली छोड़ें।
व्यर्थ बहे तो झटपट दौड़ें॥

बिन मतलब छिड़काव करें ना।
जल का व्यर्थ बहाव करें ना॥
जल की सोचें, कल की सोचें।
जीवन के पल-पल की सोचें॥
बड़ी भूल है भूजल दोहन।
यही बताता है भूकम्पन॥
कम वर्षा है अति तड़पाती।
बिन पानी खेती जल जाती॥
वर्षा जल एकत्र करेंगे।
इसी बात का ध्यान धरेंगे॥

बर्तन मांजें वस्त्र खंगालें।
उस जल को बेकार न डालें॥
पौधे सींचें आगन धो लें।
कण-कण में जीवन रस घोलें॥
जीवन जीवाधार सदा जल।
कुदरत का उपहार सदा जल॥
धन संचय तो करते हैं सब।
जल-संचय भी हम कर लें अब॥
हम सब मिल संकल्प करेंगे।
पानी कभी न नष्ट करेंगे॥

सोचें जल बर्बादी का हल।
ताकि न आए संकट का कल॥
सुन लें जरा नदी की कल कल।
उसमें कभी नहीं डालें मल॥
जीवन का अनमोल रतन जल।
जैसे बचे बचाएं हर पल॥
जल से जीवन, जीवन ही जल।
समझें जब यह तभी बचे जल॥
हरे–भरे हम पेड़ लगाएं।
उमड़–घुमड़ घन बरखा लाएं॥

पेड़ों के बिन मेघ ना बरसें।
लगें पेड़ तो फिर क्यों तरसें॥
हम सुधरेंगे जग सुधरेगा।
बूंद-बूंद से घड़ा भरेगा॥
जन-जन हमें जगाना होगा।
जल सब तरह बचाना होगा॥

कूएं नदियां बावड़ी, जब लौं जल भरपूर।
तब लौं जीवन सुख भरा, बरसे चहुं दिस नूर॥
जल बचाव अभियान की, मन में लिए उमंग।
आओ सब मिलकर चलें, **'रमेश गोयल'** संग॥

पर्यावरण एक विस्तृत विषय

पर्यावरण एक विस्तृत विषय है और इसके अन्तर्गत प्रदूषण (जल, वायु, ध्वनि आदि) की रोकथाम, जल संरक्षण यानी जल बर्बाद न करें, कम से कम प्रयोग करें और वर्षा जल संग्रहण पर ध्यान दें। वाटर हारवैस्टिंग (वर्षा जल संग्रहण) व कृषि सिंचाई में फव्वारा पद्धति को प्राथमिकता दें। जल प्रदूषण रोकना यानी नदी, तालाब, झील व अन्य जल स्रोतों में कचरा व गन्दगी न डालें। किसी भी प्रकार से पानी गंदा न करें। वायु प्रदूषण रोकना यानी धुआं न करें, वायु में जहरीली गैस आदि न जाये तथा बदबू न फैलाएं। पटाखा (जो ध्वनि व वायु प्रदूषण दोनों फैलाते हैं) का प्रयोग न करें। पटाखा से कितने भयावह अग्निकांड होते हैं और हजारों लोग असामयिक मृत्यु को प्राप्त हो जााते हैं तथा करोड़ो अरबों रुपयों की अपूर्णनीय क्षति हो जाती है।

ऊर्जा बचत अर्थात बिजली बेकार न जलायें, छोटे बल्ब एलईडी प्रयोग करें, सौर ऊर्जा का प्रयोग बढ़ायें। सौर ऊर्जा उपकरणों पर सरकारी सब्सिडी भी बहुत मिलती है। स्वच्छता से प्रदूषण घटता है। अधिक से अधिक साफ सफाई रखें। स्वच्छता से मच्छर कम उत्पन्न होगा जिससे बीमारियां घटेंगी और स्वास्थ्य ठीक रहेगा। स्वस्थ रहने से दवाई व चिकित्सीय खर्च बचेगा और कार्य क्षमता बढ़ेगी। मन प्रफुल्लित रहेगा जिससे कार्य की

गुणवत्ता बढ़ेगी। इसके लिए हमें केवल एक संकल्प करना है कि खुल्ले में कूड़ा-कचरा कभी भी नहीं डालेंगे बल्कि कूड़ादान व निर्धारित स्थान पर ही डालेंगे।

हर वर्ष एक फलदार वृक्ष का पौधारोपण करें और कम से कम 6 माह तक उसकी देखभाल करें। कागज पेड़ के गुद्दे से बनता है इसलिए कागज का कम से कम प्रयोग करें। कागज के दोनों ओर लिखें तथा टाईप करें व प्रिंट करें। लकड़ी से बनी वस्तुओं का भी कम से कम प्रयोग करें। तुलसी पौधा औषधीय पौधा है। पौधा वितरण के साथ उसके लाभ संबधित जानकारी भी अवश्य दें।

अनाज, सब्जियां व अन्य खाद्य पदार्थों को तैयार होने में कई महिनों का समय, श्रम, धन, ऊर्जा, जल आदि की खपत होती है। भोजन बर्बाद न करें। कई देशों में भोजन सहित प्राकृतिक संसाधनों को बर्बाद करने पर जुर्माना व सजा का प्रावधान है। प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा करें। **इतना ही लें थाली में। व्यर्थ न जाये नाली में।।**

प्लास्टिक का प्रयोग स्वास्थ्य व पर्यावरण दोनों के लिए हानिकारक है। केमिकल से बने होने के कारण प्लास्टिक में गर्म खाद्य पदार्थ का प्रयोग सीधा विषपान तुल्य है। अत: प्लास्टिक व डिस्पोजेबल का प्रयोग न करें। पोलिथिन थैली के बजाय कपड़े अथवा जूट का थैला प्रयोग करें।

क्यों है जल की कमी?

आधुनिकरण की ओर अग्रसर सभ्यता व बढ़ती जनसंख्या के कारण जंगल कम होते जा रहे हैं। मशीनीकरण से प्रदूषण व तापमान बढ़ रहा है। परिणाम स्वरूप जलवायु परिवर्तन हो रहा है। जिसके कारण वर्षा कम हो रही है तथा नदियों में जल घटता जा रहा है। फिर भी नदियों में कूड़ा–कर्कट, गन्दगी व जहरीला कचरा डाला जा रहा है। जल आपूर्ति के लिए नलकूपों द्वारा अधिक भू–जल दोहन के कारण भू–जल स्तर गिरता जा रहा है। प्रतिदिन आने वाले भूकम्प के कारणों में अति भूजल दोहन भी एक कारण है। देश के 5723 जल ब्लॉक में से 50% से अधिक डार्क जोन में जा चुके हैं और शेष तेजी से डार्क जोन में होते जा रहे हैं। भारत सहित पूरे विश्व में घोर पेय जल संकट उत्पन्न हो रहा है और प्राणी का जीवन खतरे में पड़ रहा है। पानी बर्बाद न करने का संकल्प करें। वर्षा जल संग्रहण, वाटर हारवैस्टिंग व रिचार्जर के द्वारा पानी की कमी को कुछ कम किया जा सकता है। खेती में फव्वारा सिंचाई पद्धति का प्रयोग करें तथा अधिक पानी खपत वाली ऊपज धान व गन्ना के बजाय तैलीय व दलहन की खेती करें तथा तम्बाकू की खेती बिल्कुल न करें। आओ हम सब मिलकर सुरक्षित भविष्य के लिए इस दिशा में संकल्प और प्रयास करें।

–रमेश गोयल

रमेश गोयल

राष्ट्रीय मंत्री–पर्यावरण
भारत विकास परिषद्

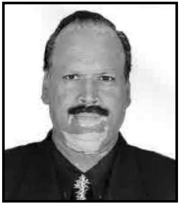

पर्यावरण यानि पौधारोपण व वृक्ष रक्षण, जल–ऊर्जा संरक्षण, प्रदूषण की रोकथाम, प्लास्टिक डिस्पोजेबल का प्रयोग रोकना व स्वच्छता। **जल चालीसा** के माध्यम से जीवनोपयोगी जल संरक्षण की अनिवार्यता का संदेश दिया गया है। परिषद् के सभी सदस्यों व पदाधिकारियों से इसके विस्तृत प्रचार के लिए निवेदन व अपेक्षा है। मुख्यमंत्री हरियाणा द्वारा अप्रैल 2012 में विमोचित जल चालीसा की इस अंक से पूर्व 45 हजार प्रतियां प्रकाशित व वितरित हो चुकी हैं। अनेक पत्र–पत्रिकाओं ने भी इसे प्रकाशित किया है। सोशल मिडिया के माध्यम से 8–10 लाख लोगों तक पहुंचाई गई है। आप जल चालीसा बांटने के लिए परिषद् के केन्द्रीय कार्यालय से मंगवा सकते हैं या मुझे संपर्क करें। शिक्षण संस्थानों को पुस्तकालयों हेतु 5–5 प्रतियां प्रदान करें। जल चालीसा का ऑडियो व विडियो भी उपलब्ध है। प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण अपनी दिनचर्या का भाग बनाएं।

रमेश गोयल 09416049757

लेखक : हरियाणा जल स्टार अवार्ड, डायमंड ऑफ इंडिया अवार्ड, सोशल जस्टिस बेस्ट मैन अवार्ड, जेम ऑफ इंडिया अवार्ड, चित्रगुप्त सम्मान 2017, राष्ट्र रतन अवार्ड, ए.जी.जे. अब्दुल कलाम राष्ट्र निर्माण अवार्ड, आउट स्टैडिंग अवार्ड, जल योद्धा सम्मान 2018 तथा अग्र रतन सम्मान 2018 से सम्मानित

नाम : रमेश गोयल **जन्म :** सिरसा 23 अक्टूबर 1948 **शिक्षा :** कला, वाणिज्य व विधि स्नातक

व्यवसाय : आयकर, जीएसटी, ट्रस्ट-सोसायटीज सलाहकार। 48 वर्ष से सिरसा में आयकर व्यवसायी, अपील विशेषज्ञ। अप्रैल 2011से दिल्ली में भी व्यावसायिक कार्यालय है।

सामाजिक : भारत विकास परिषद की सिरसा शाखा के संस्थापक अध्यक्ष (1997), 3 वर्ष प्रान्तीय उपाध्याक्ष व 2 वर्ष अध्यक्ष रहे। अप्रैल 2006 से केन्द्रीय टीम में हैं। 2013-14 व 2014-15 में राष्ट्रीय संयोजक (पर्यावरण) तथा 2015-16 में राष्ट्रीय मंत्री पर्यावरण और वर्तमान में भी यही दायित्व है। अग्रोहा मेडिकल कॉलेज के कोलरेज सदस्य तथा स्थानीय, प्रादेशिक व राष्ट्र स्तरीय विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के आजीवन सदस्य व पदाधिकारी हैं।

लेखन : कविता, लघुकथा, यात्रा संस्मरण, लेख आदि राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित। 'बिन पानी सब सून' 2010 में प्रकाशित व राज्यपाल हरियाणा द्वारा विमोचित। 'क्यों और कैसे बचाएं जल' प्रकाशनाधीन। यात्रा संस्मरण 'एफिल टावर वाया स्विस' हरियाणा साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशनार्थ सहयोग।

विशेष: देश के अकेले वरिष्ठ नागिरक जिन्होंने जल संरक्षण को एक मिशन के रूप में लिया हुआ है। अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित किए गए हैं। देश भर में अब तक लगभग 400 शिक्षण संस्थानों में सम्बोधित कर चुके हैं और डीडी न्यूज, दूरदर्शन व अनेक टी.वी. चैनलों पर वार्ता प्रसारित हुई।

20, आर.एस.डी. कॉलोनी, सिरसा (हरियाणा) ● 24, ओल्ड राजेन्द्र नगर मार्किट, प्रथम तल, दिल्ली-60

मो. 09416049757 e-mail: rameshgoyalsrs@gmail.com, www.facebook.com/ rameshgoyalsrs

भास्कर जल-स्टार अवार्ड-2011

स्वामी अवधेशानन्द जी द्वारा सम्मानित

श्री श्री रविशंकर जी को विश्व पर्यावरण दिवस 2018 पर जल चालीसा भेंट

राष्ट्रीय अध्यक्ष भा.वि.प. सुरेश जी गुप्ता द्वारा अभियान दशक पूर्ति पर सम्मानित

पर्यावरण एवं जल संरक्षण अभियान

वृक्ष लगायें-ऑक्सीजन बढ़ायें, कागज बचायें-पर्यावरण बचायें।
पौधारोपण, जल-ऊर्जा बचत को अपनी आदत का भाग बनायें।

पीने का पानी कुल पानी का एक प्रतिशत से भी कम है। उसे बर्बाद न करें।
बिना आवश्यकता नल/टूंटी कभी भी खुली न छोड़ें।

प्लास्टिक व डिस्पोजेबल पर्यावरण व स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।
कृपया इसका प्रयोग न करें। जहां संभव हो कचरा न बढ़ायें पुनः प्रयोग करें।

गंदगी नहीं फैलायें, कूड़ा कचरा खुल्ले में न डालें।
स्वच्छता का ध्यान रखें और स्वस्थ रहें।

इतना ही लें थाली में। व्यर्थ न जाए नाली में।।

भारत विकास परिषद्

बीडी ब्लाक के पीछे, पावर हाउस मार्ग, पीतमपुरा, दिल्ली-110 034

फोन : 011-27316049, 27313051 E-mail : bvp@bvpindia.com